



8. जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ
गँवाई॥

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति
नाहीं॥

भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के
प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर:- भाई के शोक में डूबे राम ने के स्त्री के लिए प्यारे भाई
को खोकर, मैं कौन सा मुँह लेकर अवध जाऊँगा? मैं जगत में
बदनामी भले ही सह लेता। स्त्री की हानि से (इस हानि को
देखते) कोई विशेष क्षति नहीं थी। स्त्री का विकल्प हो सकता है
पर भाई का नहीं। उस समय का समाज पुरुषप्रधान था। नारी को
समाज में समानता का अधिकार नहीं था।

9. कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में पत्नी (इंदुमती) के
मृत्यु-शोक पर अज तथा निराला की सरोज-स्मृति में
पुत्री (सरोज) के मृत्यु-शोक पर पिता के करुण उद्गार
निकले हैं। उनसे भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की
तुलना करें।

उत्तर:- निराला की सरोज-स्मृति में पुत्री (सरोज) के मृत्यु-
शोक तथा भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की तुलना करें
तो श्रीराम का शोक कम प्रतीत होता है क्योंकि निराला की बेटी
की मृत्यु हो चुकी थी जबकि लक्ष्मण अभी केवल मूर्छित ही थे
अभी भी उनके जीवित होने की संभावना बची हुई थी। साथ ही
संतान का शोक अन्य किसी शोक से बढ़कर नहीं होता।

10. पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी तुलसी के युग का ही नहीं आज के युग का भी सत्य है। भुखमरी में किसानों की आत्महत्या और संतानों (खासकर बेटियों) को भी बेच डालने की हृदय-विदारक घटनाएँ हमारे देश में घटती रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों और तुलसी के युग की तुलना करें।

उत्तर:- तुलसीदास के समय में बेरोजगारी के कारण अपनी भूख मिटाने के लिए सभी अनैतिक कार्य कर रहे थे। अपने पेट की भूख मिटाने के लिए लोग अपनी संतानों तक को बेच रहे थे। वे कहते हैं कि पेट भरने के लिए मनुष्य कोई भी पाप कर सकता है। वर्तमान समय में भी बेरोजगारी और गरीबी के कारण समाज में अनैतिकता बढ़ती जा रही है। आज भी कई लोग अपने बच्चों को पैसे के लिए बेच देते हैं।

11. यहाँ कवि तुलसी के

दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सबैया – ये पाँच छंद प्रयुक्त हैं। इसी प्रकार तुलसी साहित्य में और छंद तथा काव्य-रूप आए हैं। ऐसे छंदों व काव्य-रूपों की सूची बनाएँ।

उत्तर:- तुलसी साहित्य में निम्नलिखित व काव्य-रूप का भी प्रयोग हुआ है –

छंद	बरवै, छप्पय, हरिगीतिका।
काव्य- रूप	प्रबंध काव्य – रामचरितमानस (महाकाव्य) मुक्तक काव्य – विनयपत्रिका गेय पद शैली – गीतावली, कृष्ण गीतावली

***** END *****